IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मालतीमाधव के रस की चर्चा

Subrata kumar Manna

ph,d scholar ,Seacom Skills University

रसों की विविधता के विश्लेषण के लिए मुख्य रूप से यह विचार करना होता है कि वास्तव में *तमंससल* रस श्क्या है। नाटक या कविता में रस की क्या जरूरत हैह वर्ग निर्णय में रस कितने प्रकार का होता हैह विभिन्न रसों की विविधता क्या हैह ऐसे विभिन्न प्रश्नों को हल करने के लिएए हास्य का दरवाजा खोलना आवश्यक है। इसलिए मुझे रॉस वैराइटी चैप्टर में विभिन्न सज्जाकारों और आलोचकों की राय के संदर्भ में आलोचना का सामना करना पड़ा है।

साहित्यिक सिद्धांत के बीज श्रॉसश में छिपे हैं। लयए ध्वनिए गुणवत्ता और शैली का सापेक्ष महत्व संस्कृत कविता का मुख्य विषय है। कविता और नाटक का चरित्र व्यक्त रस से निर्धारित होता है। श्रसश शब्द का वास्तविक अर्थ स्वाद है। श्रसश शब्द संस्कृत के मूल श्रसश से लिया गया है। यह रस में स्वाद में रस है। छह रस दुनिया में प्रसिद्ध हैं - मीठाए कड़वाए अम्लए कड़वाए टैनिन और नमक। इन रसों को जीभ द्वारा पांच इंद्रियों में चखा जाता है। जीभ का दूसरा नाम स्वाद कलियों या स्वाद कलियों है। नाटक या कविता में रस की श्रेष्ठता या हीनता के कारण कविता या नाटक लोकप्रिय होता है। क्योंकि उनकी कविता में रुचि तभी बढ़ती हैए जब हितैषी समाज के मन में रस का संचार होता है। साहित्यकार बिश्वनाथ कहते हैं कि अगर कविता करनी हैए तो रस होना चाहिए। वह *श्बाक्यं रसात्मकं काब्यम्* है। नाटक और चूँकि यह एक प्रकार का काव्य (दृश्य काव्य) हैए इसलिए नाटक का वाक्य भी रसपूर्ण होना चाहिए। रॉस का नाटक से गहरा संबंध है। जब कोई कवि या नाटककार एक रस का आविष्कार करता हैए तो वह मनगढ़ंत कहानी के लिए उपयुक्त विभिन्न सामग्रियों को इकट्ठा करता है। वह सामग्री दोस्ताना समाजवादियों के मन में हास्य पैदा करती है।

आचार्य भरत शंकु के तत्वों के चार वर्गों की बात करते हैं - धारणाए भावनाए स्थायित्वए और संक्रामक या व्यभिचारी। इनके आवेदन के बारे में उन्होंने कहा- "बिभाबानुभाबब्यभिचारिसंजोगात रसनिस्पत्तिः"। १⁄

कहने का तात्पर्य यह है कि रस को बोध की भावना और व्यभिचार की भावना के संबंध में निपटाया जाता है। लेकिन समालोचना से स्पष्ट है कि भावना और रस एक चीज नहीं है। बस कितने विचार रस बनाने में मदद करते हैं। विचार चमत्कारी है और रस चमत्कारी। वास्तव में विचार मन की एक अवस्था है।

"बागङ्गमुखरागैश्च् सत्बेनाभिनयेन च।

कबेरन्तर्गतं भाबं भाबयन भाबोच्यते ॥। [1]

भरत के अनुसार रस की उत्पत्ति इंद्रियों से होती है लेकिन इंद्रियों की उत्पत्ति रस से नहीं होती है। नाटककार भवभूति ने मालतीमाधव प्रकरण में कई रसों को परोसा है। मुख्य कहानी और सहायक कहानी में भीए सींग का रस मुख्य है। चूँकि प्रेम और स्नेह शैली की मुख्य प्रधानताएँ हैंए सींगों की प्रधानता यहाँ व्यक्त की गई है। क्योंकि बत्सायन ने प्रेम के विभिन्न चरणों का वर्णन किया है।

यद्यपि भयानक रस और भयानक रस सींग के रस के विपरीत हैंए कवि ने उन्हें भी परोसने में सफलता प्राप्त की है। कमंदकी द्वारा कुसुमाकर उदयन में माधव के मुद्दे को उठाए जाने से उत्साहितए लवंगिका ने कामंदकी को एक सुखद तरीके से प्रकट किया जो माधव के लिए मालती के स्नेह की दुखद और निराशाजनक प्रतिक्रिया थी। यह इस स्थिति में है कि खुश सपने को तोड़ने का सपना चकनाचूर हो गया है और दुष्ट बाघ के पीछे से क्रूर खेल की कथा में एक भयानक रस अवतरित हुआ है। इस तरहए मालती–माधव की एक के बाद एक घटनाएँ रस से रस की ओर बह रही हैं।

कविता तभी सफल होती है जब वह समय की सीमाओं को पार कर सभी के दिलों में लहरें बना देती है। दोस्ताना नाटककार और समझदार आलोचकों ने अपने स्वयं के शिक्षाए स्वाद और दिमाग की मदद से उसका रस लेना शुरू कर दिया। नतीजतनए यह कभी–कभी सकारात्मक हो जाता हैए कभी–कभी नकारात्मक आलोचना। जैसा कि कविता को पहचानने के लिए कोई विशिष्ट मानदंड नहीं हैए आलोचना का रुझान विभिन्न क्षेत्रों में जारी है। भवभूति और उनके समकालीनों की आधुनिक युग से आलोचना की गई है।

भवभूति की उन्नीसवीं–बीसवीं सदी की आलोचना सामान्य रूप से बुद्धिवाद पर आधारित है। यूरोप का साहित्यिक चिंतन हमारे साहित्यए विचार को एक नया झटका देता है। और इसके

प्रकाश में, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, बंकिमचंद्र, द्विजेन्द्रलाल रॉय, प्रमुख लेखकों और साहित्य प्रेमियों ने पुनर्मूल्यांकन किया है। अंग्रेजी साहित्य के साहित्य प्रेमियों में भी ए.बी. कीथ, एस. के. डे, एन. सी. चौधरी, आर. भंडारकर, आर.डी. कर्मकार, एस. बेलवलकर और वी.वी. मिराशी जैसे विद्वानों ने भवभूति और उनके मालतीमाधव की आलोचना की है।

चूंकि मालतीमाधब एक प्रकार है, यहाँ अंगिरस और अंगारों का उल्लेख किस तरह किया जाता है.

"प्रसिद्धे अपि प्रबन्धानां नानारसनिबन्धने।
एको रसो अङ्गी कर्तब्य स्तेषां उत्कर्षं इच्छता"।। [३]

यह कहना है, नाटकों या कविताओं के रूप में प्रसिद्ध निबंधों के बीच, विभिन्न रसों और शेष घटक रसों को आनंद में वृद्धि के रूप में संक्रामक रस के रूप में कहा जाना स्वीकार्य है। उन्होंने स्वीकार किया कि एंजी रॉस एक स्थिर है। सवाल हल करने के लिए धवनिकर ने कहा.

"रसान्तर समाबेशह् प्रस्तुतस्य रसस्य यः।
नोपल्त्यान्गितां सोअस्य स्थायित्बेनाब भासिनः" ।। [४]

इसलिए, यह स्पष्ट है कि एक कविता, निबंध या नाटक में केवल एक अंगिरस है। उस अंगिरस के बीज स्थानीय हैं। ,पेड़ों के मामले में" यानी बीज की ताकत के बराबर। जिस तरह वृक्ष में बीज की ऊर्जा हर जगह संचारित होती है, उसी तरह कविता, नाटक या निबंध का सार पूरे कविता, नाटक के निबंध में बहता है। और कई दिलचस्प लेखों में, आनंदवर्धन ने रस की अंतरंगता को साबित किया है और कहा है.

"एतच्च सर्बं येषां रसो रसान्तरस्य ब्यभिचारी भबति इति निदर्शनं , तन्मतेन उच्यते। मतान्तरे अपि रसानां स्थायिनो भाबा उपचारात उक्ताः तेषां अन्गित्बे निर्बिरोधित्बं एब।" ५

रस ट्रांसफ़िगरेशन में मिलावट है, अर्थात्, एक निबंध में जिसमें बहुपदों की भीड़ होती है, एक स्थायी होगा, दूसरा पारगम्य रस होगा। इसलिए अभिनवगुप्त लोचन टिप्पणी में कहते हैं.

बहूनाम् समबेतानाम् रूपं यस्य भबेत बहु।
स मन्तब्यो रसः स्थायी शेषाः सञ्चारिणो मता॥11 [६]

अर्थात्ए समुच्चय में सबसे व्यापक रूप से उपलब्ध होने वाला रस ही स्थायी रस होता हैए शेष संचरित रस होता है।

मालतीमाधब सजावटी नवरात्रों के बीच एक प्रमुख सींग है। यहाँ पर मालती और माधव की प्रेम कहानी को इस तरह से सुनाया गया है जैसे कि ओगाज़्म यहाँ है तथा बिप्रलम्भ नामक दोनों प्रकार के सींग के रसों को व्यक्त करना संभव है। क्योंकि सींग का रस सेक्स से उत्पन्न होता है। जो एकदम सही है। यह रस शृङ्गार का है। इसलिए इसे नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में कहा गया है.

ष्शृङ्गारो नाम रति स्थायी प्रभबः उज्ज्बलबेशात्मकः। यदिकन्चिल्लोके शुचि मेध्यमुज्ज्बलं दर्शनीयम् बातम श्रिङ्गारेनोपमीयते। यस्ताबत उज्ज्बलबेषः सः शृङ्गारो बान इत्युच्यते। यथा च गोत्रकुलाचारोत्पन्नानि आप्तोपदेश सिद्धानि पुंसां नामानि भबन्ति तथैबेषां रसानां भाबानां च नात्याश्रितानां चार्यानां आचारोत्पन्नानि आप्तोपदेश सिद्धानि नामानि। एबमेब आचारोसिद्धो ह्यिोज्ज्बलबेशात्मकत्बात शृङ्गारो रसो स च स्त्री पुरुष रू हेतुक उत्तमयुब प्रकृतिष ।[७]

यह रस अच्छे स्वभाव के युवा पुरुषों और महिलाओं में व्यक्त किया जाता है।

चमकए सौंदर्य प्रसाधनए केशविन्यासए मालाओं का उपयोगए सजावटी प्रेम गीतए कोयल की मधुर आवाजेंए वसंत का उदयए बागवानीए चांदनीए फूलों के पेड़ए आदि। और शृङ्गार के रस का व्यभिचार निर्वेदए ग्लानीए शंखए असुया आदि है। जब नायक और नायिका एक दूसरे से जुड़ जाते हैं और दर्शन को छूते हैंए तो यह शृङ्गार के शृङ्गार में से एक बन जाता है। प्रियजनों के लाभ के लिए पुष्पांजलिए गहनेए अच्छे कपड़ेए ओगास्म का उत्पादन किया जाता है। फिर सेए बिना संभोग के पोषण को पोषण नहीं मिलता है। यदि वास्तविक सेक्स को वांछित वस्तु नहीं मिलती हैए तो शृङ्गार का क्षरण होता है। यही कारण है कि साहित्यदरपन में कहा गया है.

ष्यत्र तु रतिः प्रकृस्ताःनाभीश्टमुपैति बिप्रलंभ असोउष् [८]

क्योंकि इंसान के दिल में सबसे प्यारी चीज है प्यार। दुनिया के किसी भी श्रेष्ठ साहित्य की तरहए भवती के मालतीमाधब में प्रेम मुख्य विषय है। बत्सायन ने प्रेम के विभिन्न चरणों का वर्णन किया है।

ष्चक्षु रू प्रीतिर्मनसंगः संकल्पोत्पत्ति निद्राच्छेस्तनुता बिषयेभ्यो ब्याबृत्तिः लज्जा प्रणाशः उन्मादोमुर्च्छा मरनमिति।।[८]

प्यार की प्रारंभिक स्थिति पहली नजर में स्नेह हो सकती हैए फिर मन में वांछित व्यक्ति के साथ पुनर्मिलनए उसके साथ जुड़ने का दृढ़ संकल्पए गहरी चिंता में अनिद्राए अपने विचारों में पतलापन प्राप्त करनाए सभी चीजों को समाप्त करनाए अलगाव और पागलपन में सक्षम नहीं होने का दर्दए बेहोशी और यहां तक कि मौत भी।

मालतीमाधब के बाहरी शारीरिक व्यवहार और थकाऊ मानसिक स्थिति को मदनहाट के एक चित्र में लगभग दस चरणों में परोसा गया है। माधव को देखकरए मालती की हालत भवानीबलवी के तुंग बतयन से हाईवे पर एक पर्यटक की.

ष्साक्षात् कामं नबमिब रतिमालती माधबं यत्।
गारोत्कण्ठा लुलितलुलितै रन्गकैः ताम्यतीतिष्।।[१०]

यहां भवभूति श्रृङ्गार के रस से यह बताना चाहते हैं कि मालती का शरीर गहरी आवाजए पीलापन और माधव के वियोग दर्द के कारण उदास हो गया है। ऐसी दयनीय स्थिति में जहां व्यक्ति में प्रेमी के करीब आना मुश्किल हैए कवि सपने में प्रेमी के पुनर्मिलन के माध्यम से या विभिन्न दर्शन की मदद से मन के पुनर्मिलन के माध्यम से इसे करने की व्यवस्था करता है। मनोरंजन। मालवती ने अपने प्रेममय जीवन में माधव के आत्म चित्र के माध्यम से यह रास्ता अपनाया। मालती के मामले मेंए अलगाव के कारणए नबानुराग की गहरी इच्छा की तस्वीर है। मालती के न मिलने के दर्द से मदहब की हालत भी बेहाल है

ष्गमनलसं शून्या द्रिस्टि रूशरीरमसौस्थबम्
श्बसितमधिकं किं न्बितत स्यात् किमन्य दितोअथबा
भ्रमति भुबने कन्दर्पआज्ञा बिकारी च यौबनं
ललितमधुरास्ते ते भाबा रू क्षिपन्ति च धीरताम्ष 11[११]

उसकी चाल में आलस्यए कोरी दृष्टिए अपंग शरीरए लंबी सांस की कोमल मिठास ने उसे अधीर कर दिया। मालतीघाट में माधव बिवोर ने विचार रखे उसके स्वभाव के सरल गुण चले गए हैंए उसकी लज्जा चली गई हैए उसकी विनय चली गई है। वह अचानक इसके बारे में भूल जाता है। जब आप मालती के साथ होते हैंए तो आपका दिल अजीब तरह से स्थिर हो जाता हैए आपके दिल में निरंतर खुशी का अमृत बहता है। उसकी जुदाई मेंए दर्द अंगारे की तरह है।

यद्यपि प्रेम की पहली अवस्था में कामुक इच्छा की घटना अधिक होती हैए ऐसा नहीं है कि इसकी रोमांचकारी सुंदरता का कोई संकेत नहीं है। इस अवस्था में मन का मनुष्य सभी सौंदर्य की जड़ प्रतीत होता है। माधव ने भी मालती को ऐसे ही रवैये के साथ देखा। मालती ने उसे

यद्यपि पुरुषों और महिलाओं की शारीरिक सुंदरता अंतिम आकर्षण हैए यह दिल के आपसी बंधन का कारण नहीं है। हार्दिक प्रेम कभी भी शारीरिक सौंदर्य की शरण नहीं लेते। एक अदम्य दिल की खातिरए प्रेमी एक मजबूत बंधन में प्रेमी के दिल को बांधता है.

ष्व्यतिषजति पदार्थान्तरः को अपि हेतुः।
न खलु बहिरुराधीन् प्रीतयः संश्रयन्तेष्।।[१२]

माधव के लिए यह अनुचित स्नेह तब से पैदा हुआ है जब उन्होंने माधव को मालती के व्यंग्यात्मक स्नेह के साथ अपने दोस्तों के प्रति देखा। माधव का दिल बकुलबिथि में डूबने केश आलसी.बोले हुए मोहित स्नेग्ना निस्पंद.मंडा श्के व्यंग्य से मोहित है। उसे दुख की स्थिति में छोड़ दिया गया था। फिरए जब मालती गजबधु पर चढ़ती हैए तो वह बार.बार गर्म सड़क पर चलते हुए माधव को देखती है। इस घटना से उसने अपना सामान्य विवेक खो दिया और प्यार से ग्रस्त हो गया। अचानक हुई गड़बड़ी उसके दिल को सुन्न और गर्म कर देती है। शरीर और मन की पीड़ा इतनी प्रबल हो जाती है कि कुछ भी कम नहीं हो सकता। सींग के रस के गुणों के साथ इस तरह के विवरण की समानता देखी गई है। क्योंकि श्रृङ्गार की प्रकृति है.

श्रृङ्गार के रस का समर्थन अच्छी प्रकृति का है। इस रस की उत्तेजना का उपयोग चन्द्र.चन्दन चंदनए भौंरों की गूंज को गिनने के लिए किया जाता है। यह महसूस किया जाता है . भौहें और शंकु। हिंसाए मृत्युए आलस्य और जुगुप्सा को छोड़कर बाकी सब व्यभिचार के इस रस का पोषण करते हैं। इस रस का रंग भूरा है और भगवान विष्णु देवता हैं। एक.दूसरे के लिए नायक.नायिका

का स्नेह विप्लंभ के शृङ्गार में तीव्र हैए लेकिन वे एक.दूसरे से नहीं मिलते हैं। माधव मालती बिप्रालंबारस से यहां नहीं मिली हैं। मालतीमाधव किस्म के अंत तक नायक और नायिका के पुनर्मिलन के रास्ते में कई बाधाएँ आई हैं। स्वाभाविक रूप सेए विप्रलंभ शृङ्गार का व्यंजन यहाँ कामोन्माद से अधिक फलदायी रहा है। जब भी माधव को अपनी प्यारी मालती से मिलते हुए देखा जाता हैए तो संभोग का शृङ्गार व्यक्त किया जाता है। आठवें अधिनियम की शुरुआत मेंए माधव का मालती के लिए प्यार पूरी तरह से पोषित हो गया है।

ष्निश्चोतन्ते सुतनु कबरीबिन्दबो याबदेते
याबन्म्ध्यः स्तनोमुकुलयोः नाद्रभाबं जहाति।
याबतसान्द्रपतनु पुलकोभ्द्देद बत्यम्गायस्टि .
स्ताबत गारं बितर सकृदप्यं कपालीं प्रसीदष्।।[१३]

तथ्यसूत्रः

१/ नाट्यशास्त्र ६ ए मूल रू

१। नात्यशास्त्र ७ ६२

३। ध्वन्यालोक ३ ६ २१

४। ध्वन्यालोक ३ ६ २१

५। ध्वन्यालोक ३ ध्एलोचन

६। ध्वन्यालोक ३ ध्एलोचनए १७४ पृरू

७। नाट्यशास्त्र ६ए६१२५ पृरू

८। साहित्यदर्पन ३ ६१८४ पृरू

९। कामसूत्र १ ६५

१०। मालतीमाधब १ ६१ ५

११। मालतीमाधब १ ६१७

१२। मालतीमाधब १ ६२ ४

१३। मालतीमाधब ४ ६ २

ग्रन्थसूची

१ए कारमारकारए आर। डीय . श्मालतीमाधबमश्ए आर्य भूषण प्रेसए पुणेए १९३५

२। कालेए एम। आरए . मालतीमाधबम श्ए मोतीलाल बारानसीदासए तीसरा संस्करणए दिल्लीए १९८६

३। काने ए पी। वीए .ए उत्तररामचरितमए मोतीलाल वाराणसीदासए दिल्लीए १९८३

४। चक्रवर्तीए मनोजए . संस्कृत काब्य तल्बे में रसबाद: उत्पत्ति और विकास श्ए संस्कृत पुस्तक भंडारए प्रथम संस्करणए कलकत्ताए २०० ९

५। तेलंगए मंगेश रामकृष्णए . श्मालतीमाधमश्ए निर्णय सागर प्रेसए पहला संस्करणए बॉम्बेए १८९२